© 2016 IJSRSET | Volume 2 | Issue 2 | Print ISSN: 2395-1990 | Online ISSN : 2394-4099

नायिका के भेद एवं उपभेद : आचार्य विश्वेश्वर के दृष्टिकोण से

दीपा पाण्डेय
शोधच्छात्रा
संस्कृत विभाग,
इलाहाबाद विश्वविद्यालय,
प्रयागराज

शोध–सार

नाट्य का हमारे जीवन से घनिष्ठ सम्बन्ध हैं। विश्व का कोई ऐसा ज्ञान शिल्प, विद्या, कला कर्मादि नहीं है जो नाट्य के अन्तर्गत नहीं है। इसमें विश्व की समस्त भावनाओं का प्रदर्शन होता है। किसी भी नाट्य का मुख्य केन्द्र बिन्दु नायक व नायिका होते है। सम्पूर्ण कथानक उन्हीं पर आश्रित होता है। ये कथानक रसपूर्ण व आलंकारिक होते हैं। नाट्य में नायिका का मुख्य स्थान है। आचार्य विश्वेश्वर ने 'नायिका भेद' की विषय सामग्री को नये कलेवर के साथ 'रसचन्द्रिका' में प्रस्तुत किया है। नायिका भेद की व्यापकता एवं उसके महत्व का प्रतिपादन कर प्रमाणिक आधार प्रस्तुत किया है।

मूल भाब्द– घनिश्ठ, शिल्प, रसपूर्ण, नायिका,रसचन्द्रिका, अभिनयपूर्ण, अलंकारकि,लोकमनोरंजक।

संस्कृत साहित्य के नाटकों में सुखान्त, रमणीय, आलंकारिक, अभिनयपूर्ण, रस विशेष का परिपाक, लोकमनोरंजक आदर्श, नैतिकतापूर्ण कथानक आदि विशेषताएं होती हैं। 'नायक' के समान गुणों वाली स्त्री नायिका कहलाती है। काव्य तथा नाट्य में नारी को जहाँ एक ओर काम का मूल माना गया है वहीं दूसरी ओर शैवागमों तथा वैष्णवधर्म में उसे ईश्वर की शक्ति के रूप में भी प्रतिष्ठित किया गया है। परिणामस्वरूप नारी के वाह्य सौन्दर्य के अतिरिक्त उसके आभ्यान्तर सौन्दर्य, आचरण की शुद्धता, प्रकृति, अवस्था आदि के आधार पर नायिका के विविध भेद प्राप्त होते है जिसका आधार नाट्यशास्त्र माना गया है।

इसके अतिरिक्त धनंजय, रूद्रभट से लेकर विश्वनाथ, रूपगोस्वामी आदि आचार्यों ने सूक्ष्म अथवा स्थूल रूप में नायिका भेद के प्रसंग में कामतंत्र तथा नाट्यशास्त्र को ही मुख्य आधार बनाया है। संस्कृत कवियों, आचार्यों तथा विद्वानों का प्रभाव हिन्दी कवियों तथा आचार्यों में भी दृष्टिगत होता है। हिन्दी कवि केशवदास भी इसी श्रेणी में आने वाले आधार बनाया है और रसिक प्रिया की रचना की। रसचन्द्रिका के अध्ययन से ज्ञात होता है कि रसचन्द्रिका भरतमुनि के नाट्यशास्त्र से सर्वाधिक प्रेरित है।

स्वकीया, परकीया तथा साधारण के भेद से आचार्य विश्वेश्वर ने रसचन्द्रिका में नायिका के तीन प्रकार एवं उनके भेदों तथा उपभेदों सहित नायिकाओं के 384 प्रकारों का वर्णन किया है।

स्वकीया

विनयार्जवदियुक्ता गृहकर्मपरा पतिव्रता स्वीया। अर्थात् विनय तथा सरलता आदि गुणों से युक्त, घर के कार्यों में तत्पर रहने वाली पतिव्रता स्त्री 'स्वकीया' नायिका कहलाती है। जैसे उत्तररामचरितम में राम की पत्नी सीमा स्वकीया नायिका अवस्था के अनुसार तीन प्रकार की होती है।

मुग्धा

प्रथमवतीर्णयौवनमदनविकारा रतौ वामा।

कथिता मृदुश्च माने समधिकलज्जावती मुग्धा।।

जिसमें नवनीन यौवन की छटा पहले–पहल उत्पन्न हुई हो (प्रथमावतीर्ण–यौवन), जिसमें काम कलाओं के विलास पहले–पहल आविर्भाव हुए हो, जो रति करने में संकोच तथा झिझक का प्रदर्शन करें, जिसका मान चिर–स्थायी न हो या अत्यधिक लज्जाशील नायिकाए 'मुग्धा' कही जाती है।

मुग्धा नायिका ज्ञातयौवना तथा अज्ञातयौवना के भेद से दो प्रकार की होती है।

मुग्धा ही क्रम से 'नवोढ़ा' और 'विश्रब्ध निबोढ़ा' हो जाती है। मुग्धा नायिका का उदाहरण कुमार सम्भवम् में पार्वती शंकर से सम्भोग के समय कतराती है। शंकर के कुछ कहने पर पार्वती प्रत्युत्तर नहीं देती है। शंकर के साथ एक शय्या पर शयन करने पर भी वह पराङ्मुख रहा करती है। फिर भी शंकर जी प्रसन्न होते थे।

मध्या विचित्र सुरता प्ररूढस्मरयौवना।

ईशात्प्रगल्भवचना मध्ययव्रीडिता मता।।

विचित्र सुरता, प्ररूढस्मरा, प्ररूढ़यौवना, मध्यव्रीडिता, नायिकाएं मध्या कहलाती है।

मध्या

परन्तु आचरण के आधार पर तीन भेद किये गये है।

1. धीरा 2. अधीरा 3. धीरा–धीरा

प्रिय के अपराध करने पर 'धीरा' मध्या वक्रोक्ति के द्वारा उसमें हृदय को दुखित करती है। 'अधीरा' नेत्रों में अश्रु भरे कठोर वचन सुनाती है। 'धीरा–धीरा' रूदन करने के साथ ही साथ व्यंग्य वचनों का प्रयोग करती है।

प्रगल्भा

स्मरान्धा गाढ़तारूण्या समस्तरतकोविदा।

भावोन्नता दरव्रीडा प्रगल्भाक्रान्तनायका।।

प्रगल्भा नायिका में यौवन, क्रोध और काम अत्यन्त दीप्त रहता है। प्रिय के द्वारा स्पर्श किये जाने पर ही वह चैतन्य का त्याग कर अचेतन सी हो जाती है।

जैसे सखि सूरत क्रीडार्थ जब शय्या पर प्रिय का आगमन होता है, तो नीबी बन्धन स्वयं छूट जाता है, मेखला के कारण अधोवस्त्र, नितम्ब पर ठहर जाता है क्या बताऊ मैं इतना ही जान पाती हूँ। तद्नन्तर प्रेमस्पर्श से आनन्द विभोर हो जाती हूँ। मैं कौन हूँ? वह कौन है? सूरतक्रीड़ा क्या है? इन सब बातों का मुझे कुछ भी ज्ञान नहीं रहता है।

मध्या नायिका के समान इनके भी तीन भेद किये गये हैं।

1. धीरा 2. अधीरा 3. धीरा–धीरा

धीरा प्रगल्भा नायक का आदर करती है पर सूरत क्रीड़ा के प्रति उदासीनता प्रकट करती है। अधीरा प्रगल्भा, क्रोध में आकर नायक ताड़ना करती है। धीरा–धीरा प्रगल्भा व्यंग्य और कठोर वचन कहती है।

इसके साथ ही मध्या तथा प्रौढ़ा के तीन–तीन भेद का फिर से ज्येष्ठा तथा कनिष्ठा के रूप में वर्गीकरण किया जाता है।

ज्येष्ठा नायिका नायक की पहली, तथा कनिष्ठा उसकी अभिनव प्रेमिका होती है। रत्नावली नायिका में वासवदत्ता ज्येष्ठा है तथा सागरिका कनिष्ठा है। इस प्रकार मध्या के छः भेद तथा प्रगल्भा के भी छः भेद हो जाते है। मुग्धा नायिका प्रायः एक ही तरह की मानी जाती है। उसे इन भेदों में मिला देने पर इस वर्गीकरण के अनुसार नायिका की तेरह भेद होते हैं।

परकीया

परकीया द्विधा प्रोक्ता परोढ़ा कन्यका तथा।
यात्रादिनिरताऽन्योढ़ा कुलटा गलितत्रया।।
कन्या त्वजातोपयमा सलज्जा नवयौवना।।

परकीया नायिका, अविवाहिता (अनूढ़ा) विवाहिता पत्नी के भेद से दो प्रकार की होती है। इनमें यात्रादिक मेले तथा तमाशों की शैकीन निर्लज्जा कुलटा ही 'अन्योढ़ा' कही जाती है, जबकि अविवाहित, सलज्जा तथा नवयौवन नायिकाएँ 'कन्या' कही जाती है। पिता, भ्राता आदि के वशीभूत होने के कारण ये भी 'परकीया' कही जाती है, जैसे मालतीमाधवम् में मालती।

साधारण

साधारणस्त्री गणिका कलाप्रगल्भाधौत्ययुक।।

यह नायिका गणिका होती है, जो कलाचतुर, प्रगल्भा तथा धूर्त होती है।

जो लोग छिपकर कामतृप्ति करना चाहते हैं जिनसे बड़ी सरलता से पैसा ऐंठा जा सकता है, बेवकूफ है, आजाद है, घमण्डी है या नपुंसक, है, ऐसे लोगों से गणिका ठीक इसी तरह व्यवहार करती है, जैसे वह उन्हें सचमुच प्रम करती हो, किन्तु उसी वक्त तक जब तक उनके पास पैसा है जब वह देख लेती है, कि वे गरीब हो गये है, तो उन्हें अपनी माँ के द्वारा निकलवा देती है। परन्तु कहीं–कहीं वेश्याएं भी कामाभिभूत होती हुई, राग से मुक्त होती है,

जैसे 'मृच्छकटिकम्' में बसन्तसेना। ये चाहे अनुरक्त हो या विरक्त इनमें रति अत्यन्त दुर्लभ है। इस प्रकार स्वीकया के तेरह भेद, परकीया के दो भेद तथा सामान्य कुल मिलाकर सोलह प्रकार की नायिकाएँ हुईं।

ये सभी तरह की नायिकाएँ दशा भेद से आठ तरह की होती है–

स्वाधीनपतिका

"कान्तो रति गुणाकृष्टो न जहारित पदान्तिकम्।
विचित्र विभ्रमासक्ता सा स्यात्स्वाधीनभर्तुका"।।

रतिगुण से आकृष्ट प्रियतम, जिसका संग न छोड़े वह विचित्र विलासों से युक्त नायिका 'स्वाधीनतपतिका' कही जाती हैं–

अस्माकं सखि वाससी न रूचिरे, ग्रैवेयकं नौज्ज्वलं,

नो वक्रा गतिरुद्धतं न हसितं, नैवास्ति कश्चिन्मदः।

कित्वन्येऽपि जना वदन्ति सुभगोऽप्यस्थाः प्रियो नान्यतो

दृष्टि नक्षिपतीति विश्वमियता मप्यामहे दुःस्थितम्।।

खण्डिता

पार्श्वमेति प्रियो यस्मा अन्यसभोगचिन्हितः।

रस खण्डितेति कथिता धीरैरीर्ष्याकषायिता।।

अन्य स्त्री के संसर्ग– चिन्हों से युक्त नायक, जिसके पास जाय, वह ईर्ष्याकलुषित नायिका 'खण्डिता' कही जाती है।

लाक्षालक्ष्म ललाटपट्टमभितः केपूरामुद्रा गले

वस्त्रे कज्जलकालिमा नयनोस्ताम्बूलरागो धनः।

दृष्टवा कोपविधापि मण्डनमिदं प्रातश्चिरं प्रेयसो

लीलातामरसोदरे मृगदृशः श्वासाः समाप्ति गताः।।

ललाटपटल के चारों ओर लाक्षा के चिन्ह, गले में कंकण की छाप मुख्य पर कज्जल की कालिमा, दोनों नयनों में गाढ़ ताम्बूल–राग, प्रातःकाल कोपोत्पन्न करने वाले प्रियतम के ऐसे पूर्वोक्त विचित्र आभूषणों को देखकर मृगाक्षी के सारे श्वास लीलाकमल में ही समाप्त हो गये।

अभिसारिका

अभिसारयते कान्तं या मन्मथवंशवदा।

स्वयं वाभिसरत्येषा धीरैरूक्ताभिसारिका।।

कामाभिभूत होकर यदि कोई नायिका किसी पूर्वसंकेतित स्थान पर बुलावे या स्वयं जावे, तो वह 'अभिसारिका नायिका' कही जाती है। कुलीना, वेश्या तथा दासी के भेद से इसके भी तीन उपभेद हैं।

उत्क्षिप्तं करकंकणद्धयमिदं बद्धा दृढ़ं मेखला

यत्नेन प्रतिपादिता मुखरयोर्मजीरयोर्मकता।

आरब्धे रभसान्मया प्रियसखि क्रीड़ाभिसारोत्सवे

चण्डालस्तिमिरावगुण्ठनपटक्षेपं विधन्ते विधुः।।

हाथ के कंकण ऊपर को चढ़ाये ढीले कर्धनी कसके बाँधी। मंजीरा का बजना जैसे–तैसे रूका। हे प्रियसखि, इतना कहके ज्यों ही मैने क्रीड़ा के लिए अभिसरण प्रारम्भ किया है, त्यों ही देखों वह चण्डाल चन्द्रमा अन्धकार रूप परदे को हटा रहा है।

कलहान्तरिता

चाटुकारमपि प्राणनाथ रोषादपास्य या।

पश्चातामवाद्मोति कलहान्तरिता तु सा।।

जो नायिका क्रोध के कारण पहले तो प्रार्थना करते हुए प्रियतम को निरस्त कर दें और फिर पीछे पश्चाताप करें, उसे 'कलहान्तरिता नायिका' कहते है।

अनालोच्य प्रेम्णेः परिणतिमनादृत्य सुहृद

स्त्वयाकाण्डे मानः किमिति सरले! प्रेयासिकृतः?

स्माकृष्टा होते विरहदहनोदभासुरशिखाः,

स्वहस्तेनांगारास्तदलम धुनारण्यरूदितैः।।

हे सरले! तुमने प्रेम के परिणाम की आलोचना न करके एवं सुहृदों का अनांदर करके, असमय अपने ही अपने प्यारे के विषय में मान क्यों धारण कर लिया? तूने तो अपने हाथों से ही विरह रूप अग्नि से देदीप्यमान शिक्षा वाले इन अंगारों को आकृष्ट कर लिया। अतः अब अरण्यरोदन से क्या प्रयोजन?

विप्रलब्धा

प्रियः कृत्वापि संकेत यस्या नायाति सलिधिम्।

विप्रलब्धा तु सा श्रेया नितान्तमवमानिता।।

संकेत करके भी प्रिय, जिसके पास न आवे, वह नितान्त अपमानित हुई नायिका 'विप्रलब्धा' कही जाती है।

उत्तिष्ठ दूति यामो यामो यातस्तथापि नायातः।

याडवः परमपि जीवेज्जीवित नाथे भवेन्तस्याः।।

हे दूतिः उठ कर यहाँ से चले। एक प्रहर बीत गया, फिर भी वह नहीं आये, जो उसके बाद भी जियेगी उसके वह प्राणनाथ होगे।

प्रोषितभर्तुका

नाना कार्यवशाद यस्था दूरदेशं गतः पतिः।
सा मनोभव– दुःखाती भवेत्प्रोषितभर्तुका।।

गृहस्थधर्म के अनेक कार्यों में उलझा हुआ, जिसका पति दूरदेश में चला गया हो, वह कामपीड़िता नायिका 'प्रोषितभर्तुक' कही जाती है।

तां जानीभा परिमितकथां जीवतं में द्वितीयं,

दूरीभूते मपि सहचरे चक्रवाकीमिवैकाम।।

गाढ़ोत्कण्ठा गुरुष दिवसेष्वेषु गच्छत्सु बाला

जाता मन्ये शिशिरमथितां पदिमनिं वान्यरूपाय।।

हे प्रियमित्र पयाद! मुझ सहचर के दूरवर्ती होने पर चकवी की तरह अल्प भाषिणी और अकेली उसको तुम मेरा दूसरा जीवन जान लो। घनिष्ठ इत्कण्ठावाली वह युवती विरह के कारण दीर्घ इन दिनों के बीतने पर पाले से पीड़ित कमलिनी की भाँति दूसरे ही रूप को प्राप्त हो गयी होगी मैं ऐसा समझता हूँ।

वासकसज्जा

कुरूते मण्डनं यस्याः सज्जिते वासवेश्मनि।

सा तु वासकसज्जा स्याद्विदित प्रियसंगमा।।

सुसज्जित महल में जिस नायिका को सखियाँ सुभूषित कर रही हो तथा प्रिय का समागम निश्चित हो, उसे 'वासकसज्जा' नायिका कहते हैं।

तल्पं कल्पय दूति! पल्लवकुलैस्तर्लतामण्डपे

निर्बन्धं मम पुष्पमेण्डनविधौ नाद्यापि किं मुंचसि?

पश्य क्रीडदमन्दमन्धतमसं वृन्दाटवीं तस्तरे

तद्गोपेन्दकुमारमत्र मिलितप्रायंमनः शङ्कते।।

हे दूति! लतामण्डप में पल्लवों के द्वारा शय्या की रचना करो, एवं पुष्पों द्वारा मेरा शृंगार करने के प्रकार में अपना आग्रह अब भी क्यों नहीं त्यागती है देख, खेल सा करते हुए गाढ़ अन्धकार ने सारे वृन्दावन को आच्छादित कर दिया। अतः गोपेन्द्रकुमार प्रायः यहाँ समीप में ही आ गये हैं, मेरा मन ऐसी आशंका करता है।

विरहोत्कण्ठिता

आगन्तुं तु कृतचित्तोऽपि दैवान्नायाति चेत्प्रियः।

तदनागमदुःखार्ता विरहोत्कण्ठिता तु सा।।

आने के निश्चय करने के बाद भी जिसका प्रियतम न आ सके, वह खिन्न मन वाली नायिका 'विरहोत्कण्ठिता' कहीं जाती है।

सखि! स विजितो वीणावाधैः कयाप्यपरस्त्रिया

पणितमंभवत्ताभ्यां तत्र क्षमाललितं ध्रुवम्।

कथमितरथा शेफालीष स्खलत्कुसुमास्वपि

प्रसरति नभोमध्येऽपीन्दौ प्रियेण विलम्व्यते?

हे सखि! मुझे तो अनुमान होता है कि हमारे प्रिय आज किसी अन्य स्त्री से बीणा का वाद्य में पराजित हो गये हैं? और उन दोनों के द्वारा यह बाजी लग गयी होगी कि जो हार जायेगा उसको आज की रात्रि का मंगलमय महोत्सव मनाना होगा। यह मेरा निश्चित सिद्धान्त है, अन्यथा शेफाली (हारसिंगार) करने पर भी हमारे प्रिय क्यों विलम्ब करते?

गुणानुसार भेद

उपर्युक्त आठों नायिकाओं के भेद को पुनः बताते आचार्य विश्वेश्वर हते है– नायिकाएँ उत्तम, मध्यम और अधम के प्रकार भेद से तीन तरह के होते हैं। इनमें उपर्युक्त गुणों के तारतम्य के आधार पर ही इनकी वह उत्तमता, मध्यत्ता या अधिमता निर्धारित की जाती है।

उत्तमता, मध्यमा तथा अधमता के भेद से 384 प्रकार की नायिकाएँ हो जाती हैं।

आचार्य विश्वेश्वर ने 'नायिका' भदे की विषय सामग्री को नये कलेवर के साथ 'रसचन्द्रिका' में प्रस्तुत किया है। नायिका भेद की व्यापकता एवं उसके महत्व का प्रतिपादन कर प्रमाणिक आधार प्रस्तुत किया है। नायिका के यौवन, कोप तथा चेष्टा आदि का विवेचन दर्शनीय है।

इस प्रकार नायक, नायिका, दूत–दूती, मंत्री, पुरोहित आदि सारे ही नाटकीय पात्र उत्तम, मध्यम, अधम रूप से तीन प्रकार के माने जाते हैं। यह निर्धारण करना कि नायिका किस कोटि की है यह गुणों की विशेषता के तारतम्य के आधार पर स्थित है।

आचार्य विश्वेश्वर ने शील की दृष्टि से नायिका के अनेक प्रकारों का वर्णन किया है– देवशीला, असुरशीला, गन्धर्वशीला, राक्षसशीला, नागशीला, पिशाचशीला, यक्षशीला, व्यासशीला, मानुषशीला, वानरशीला, हस्तिशीला, मृगसत्त्वा, मत्स्यसत्त्वा, उष्ट्रसत्त्वा, मकरसत्त्वा, खरसत्त्वा, शूकरसत्त्वा, अश्वशीला, महिषशीला, गोशीला आदि।

नायिका की सहायिकायें

नायिका की सहायिकायें नायक के साथ समागम कराने वाले सहायक ये लोग हैं– दूतियाँ, दासी, सखी, नीच औरतें, धाय की बेटी, पड़ोसिन, सन्यासिनी शिल्पिनी स्वयं नयिका ही (स्वयं दूती के रूप में), ये सभी दूतियाँ आदि नायक के मित्र–पीठमर्द, विट, विदूषक आदि गुणों से युक्त होती है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1.रसचन्द्रिका– पृ0 2–3, 4, 5, 6–7, 8'15, 16–32

2.नाट्यशास्त्र–22/102–3, 22/104–6, 22/106–107, 22/108–9, 10, 11,

22/112–115–16–17–18–19–20–21–22–23–2, 22/125–145

3.भाव प्रकाशन– पृ0 110–11

4.साहित्यदर्पण– 3/56, 58, 59, 60, 3/66–68, 3/74–76, पृ0 120

5.दशरूपक– पृ0 117–120

6.नाट्यदर्पण–384–386